Quest Journals
Journal of Research in Humanities and Social Science
Volume 1 ~ Issue 1 (2013) pp: 29-33
ISSN(Online):2321-9467
www.questjournals.org

Research Paper

आधुनिक राजस्थानी चित्रकला में रेखीय अभिव्यंजना एवं समकालीन कला पर प्रभाव

डॉ. मनीषा चौबीसा
राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर

आधुनिक कला का प्रारम्भ यूरोप के पुनरूत्थान काल से हो चुका था। परन्तु भारतीय कला के संदर्भ में देखें तो यह माना गया कि मात्र प्राचीन मान्यताओं का विरोध ही आधुनिकता को जन्म नही देता बल्कि मानसिक विचार बाहय वातावरण एवं समय के साथ परिवर्तन भी आधुनिकता को जन्म देता है। आधुनिक कला जीवन की समसामयिक, सृजन, गहन संवेदना तथा वैचारिक शक्ति के साथ अभिव्यक्ति का प्रयास है। यही कारण है कि आधुनिक कला में कोई सर्वमान्य सिद्धान्त प्रचलित नहीं है। यहाँ व्यक्तिगत विचार, कल्पना, वैज्ञानिक एवं बौद्धिक मान्यताएं कलाकारों को प्रभावित करती है अतः कला अभिव्यक्ति अब कैनवास तक ही सीमित न रहकर धातु, काष्ट, रेत, मिट्टी और अन्य माध्यमों द्वारा भी की जाने लगी है। भारतीय कला का प्रमुख शास्त्रीय आधार अजन्ता की गुफा चित्रों को माना जाता है। उसी का अनुसरण करते हुए राजस्थानी चित्रकला में भी आधुनिकता को अपनाया गया जिसमें रेखीय अभिव्यंजना को मुख्य आधार माना गया।

कला और संस्कृति के विकास में राजस्थानी कला का आरम्भ राजसी एवं सामन्ती परिवेष की परिछाया में लोक संस्कृति के मिश्रित स्वरूप से हुआ। अरावली से घिरी घाटियों में विभिन्न धर्मों के समन्वय से चित्रकला में रेखा संयोजन की अनोखी परम्परा का प्रादुर्भाव हुआ। प्रागैतिहासिक शैल चित्र तथा शास्त्रीय पद्धति में जिन कला तत्वों को लेकर काम हुआ उन्ही के संयोजन ने आधुनिक कला को जन्म दिया।

राजस्थान में आधुनिक कला का प्रारम्भ 1851 ई. में विलियम कारपेन्टर तथा 1855ई में एफ. सी. लेविस जैसे चित्रकारों के साथ स्थानीय चित्रकारों की चित्रण पद्धति से ही ज्ञात हो जाता है। परन्तु वास्तव में राजस्थानी कला के उत्तरार्द्ध काल की कला में नवीन दृष्टि एवं बहुरूपीय आयामों को प्रस्तुत करने का श्रेय चित्रकार कुन्दन लाल मिस्त्री (1860–1926 ई) को जाता है जिन्होनें विपरीत परिस्थितियों में परम्परा से हटकर कला के क्षेत्र में नवीन मूल्यों को अपनाते हुए तैल एवं टेम्परा द्वारा चित्रण करने में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की। इन्होनें सर जे. जे. स्कूल ऑफ आर्ट, मुम्बई से कला की विधिवत शिक्षा ग्रहण की तथा नवीन प्रयोग करते हुए कई पुरूस्कार प्राप्त किये। वे प्रथम राजस्थानी चित्रकार थे, जिन्होनें लगातार तीन वर्षो तक स्लेट कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट, लंदन से कला शिक्षा प्राप्त की तथा फिंगर ड्रांइग में कई पुरूस्कार प्राप्त किये। कुन्दन लाल ने अपनी कला में अनेकों नवीन प्रयोग किये। पाश्चात्य् कला की तर्ज पर भारतीय जन जीवन को चित्रण में स्थान प्रदान किया और चित्रण में अंलकरण अथवा बारिकी के स्थान पर रेखा की तीव्रता पर जोर दियाअतः 1885 ई. ने वेलिंग्टन पुरुस्कार तथा 1915 ई. में चित्रकला भूषण की प्रमुख उपाधि प्राप्त की। उनकी कलाकृतियों में समसामयिक आधुनिक कला की झलक दिखाई देती है। जिसके फलस्वरूप राजस्थानी चित्रकला में नवीनता आई।

इन्ही के समकक्ष 20 वीं शताब्दी के प्रारम्भ में श्री सौभागमल गहलोत ने जलरंग एवं वाष पद्धति में कई वर्षो तक कार्य किया। इसी श्रृंखला में स्व. नन्दलाल शर्मा ने इन्दौर स्कूल ऑफ आर्ट से शिक्षा ग्रहण कर आधुनिक कला को अपनाया। जयपुर के चित्रकार मुरलीधर, रामचन्द्र, रघुनाथ आदि तथा बून्दी के चेनराम भी स्वदेशी विषयों में विदेशी तकनीक से चित्रण प्रारम्भ कर चुके थे, जिसमें समाज की तत्कालीन सामाजिक स्थिति का चित्रण था।नाथद्वारा के प्रसिद्ध चित्रकार घासीराम (1910–1930 ई.) ने भी कला के नवीन मानदण्डों को स्वीकार करते हुए विभिन्न चित्र बनाये। चित्रकार घासीराम अपने प्रवाह पूर्ण रेखांकन एवं सुडोल कोमल भाव अभिव्यक्ति के लिए आज भी प्रसिद्ध है।घासीराम के समान ही 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा 20 वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में नवीन यूरोपीयन तकनीक से कार्य करने वाले प्रमुख नाथद्वारा के कलाकार रहे। कुन्दनलाल मिस्त्री ने नवीन पद्धति में रेखाचित्र बनाकर राजस्थानी शैली में आधुनिकता की शुरूआत की। यूरोपीयन मॉडल पद्धति में बनाया गया रेखाचित्र विशेष प्रशंसनीय है जिसमें स्त्री मॉडेल को यथार्थ शैली में रेखांकित किया गया है। सम्पूर्ण चित्रण में मात्र रेखाओं की विभिन्न प्रकारों से ही आकृति संयोजन किया जाना इनकी विशेषता है। अन्य रेखाचित्रों *पिता का स्नेह*(चित्र सं. 2) व *प्रवचन सुनती महिला* (चित्र सं. 1) में सरल एवं कोमल रेखांकन द्वारा विभिन्न भावों को दर्षाया गया है। इसी क्रम में नाथद्वारा के कुछ अन्य कलाकारों द्वारा बीसवीं शताब्दी में कुछ रेखाचित्र बनाये गये जिनकी अभिव्यंजना तथा लावण्यता के आधार पर उन्हें श्रेष्ठ चित्रों की श्रेणी में रखा जा सकता

है। इस प्रकार उदयपुर एवं नाथद्वारा की चित्र षैलियों में राजस्थानी रेखांकन परम्परा के 16वीं षताब्दी से आरम्भ होकर 20वीं षताब्दी तक के विभिन्न उदाहरण देखे जा सकते है।

मेवाड़ के समान ही राजस्थानी चित्र परम्परा में ढूँढ़ार क्षेत्र का महत्वपूर्ण स्थान रहा है जहां का रेखांकन अपनी मौलिकता एवं सृजनषीलता की दृष्टि से उत्तम है।ढूँढार चित्रण में रेखांकन की यही परम्परा 19वीं 20वीं शताब्दी में भी विद्यमान रही जिसका सर्वोत्तम उदाहरण 1920 ई. में बना *पृथ्वीराज एवं संयोगिता* का रेखाचित्र है जिसमें दोनों को घोडे पर बैठे बनाया गया है। सम्पूर्ण रेखाचित्र में घोड़े की गति एवं बारीक कोमल रेखा का अप्रतिम प्रयोग ही दृष्टव्य है। महीन एवं अलंकृत रेखा द्वारा किया गया चित्रण कलात्मक सौंदर्य का अभूतपूर्व उदाहरण है। ऐसी ही रेखांकन विशेषता जयपुर शैली में 20 वीं शताब्दी के मध्य काल तक देखी गई जिसका प्रमुख उदाहरण 1975 ई. में बने महाकाली के रेखाचित्र में देखा जा सकता है जिसमें पाँच मस्तको वाली माँ काली का चित्रण बारीक रेखाओं के साथ किया गया है। दूसरी ओर बीकानेर तथा शेखावटी के अन्य क्षेत्रों में भी आधुनिक कला का प्रारम्भ हो चुका था जिसका श्रेय कोयम्बटूर के चित्रकार हरमन मूलर को जाता है। मूलर ने राजस्थान के ऐतिहासिक कथानकों को विषय के रूप में चुनकर नवीन तकनीक के प्रयोग से 1897 ई में स्वर्णपदक प्राप्त किया। जोधपुर के मेहरानगढ़ में स्थित वीर दुर्गादास का व्यक्ति चित्र इसका उदाहरण है, जिसमें पाश्चात्य प्रभाव दिखाई पड़ता है।

उपर्युक्त सभी उदाहरणों से स्पष्ट हो जाता है कि आधुनिक कला का प्रारम्भ राजस्थान में काफी पहले हो चुका था जिसने परिवर्तनशील सामाजिक और राजनैतिक परिस्थितियों ने कला व संस्कृति को सबसे पहले प्रभावित किया। चित्रकला के क्षेत्र में चित्रण के प्रमुख तत्त्वों में बदलाव करके कलाकार ने उसे नवीन स्वरूप प्रदान किया जिसमें सबसे अधिक राजस्थानी चित्रकला की मूल रेखा में देखा जा सकता है।इसका पूर्ण श्रेय राजस्थान में काम करने वाले उन कलाकारों को जाता है जिन्होनें विचारधारा को तत्परता से अपनाते हुए अपनी अभिव्यवित में सम्मलित कर लिया।राजस्थानी चित्रशैली में पुर्नजागरण का प्रथम प्रयास पद्मश्री रामगोपाल विजयवर्गीय ने किया। इनका जन्म 1905 ई. सवाई माधोपुर में उस समय हुआ जब देश में परिवर्तन का दौर चल रहा था। 1928 ई. से इन्होने अपनी कला यात्रा प्रारम्भ की जिसमें सदैव नवीन प्रयोगों पर जोर दिया। उनकी रेखा में गति, संगीत एवं लय का संगम देखा जा सकता है इसके अतिरिक्त वाश पद्धति से कार्य करके सौंदर्य बोध को मनावैज्ञानिक स्तर तक पहुँचाने का श्रेय भी रामगोपाल विजयवर्गीय को जाता है। इन्होनें मुख्यतः तीन प्रकार की शैलियों में काम किया– (1) राजस्थानी कला की परम्परिक शैली (2) पुनरूत्थान काल से प्रभावित शैली (3) नवीनता का समावेश कर आधुनिक कला की वास्तविक शैली।राजस्थान में आधुनिक कला को गतिमान करने वाले एक अन्य चित्रकार भवानीचरण गुई थे। बंगाली परिवार से सम्बन्धित होते हुए भी अजमेर व उसके आस पास के भागों में नवीन कला शैली को प्रसारित किया। लखनऊ स्कूल ऑफ आर्टस् से प्रथम श्रेणी में पंचवर्षीय डिप्लोमा प्राप्त करने के उपरान्त गुई ने भारतीय विषय वस्तुओं की नवीन एवं निजी तकनीक में प्रस्तुत करना प्रारम्भ किया।

आधुनिक कला धारा के इस काल में स्वतन्त्र एवं उन्मुक्त चित्रण के लिए प्रसिद्ध चित्रकार नन्दलाल शर्मा (1914–47 ई) का भी बहुत बड़ा योगदान रहा यद्यपि वे अल्प आयु में ही चलबसे तथापि आधुनिक चित्रकला धारा में नवीन प्रयोग एवं नैसर्गिक सौंदर्य को रेखांकन के माध्यम से साकार रूप देने का श्रेय उन्हीं को जाता है। उदयपुर के दृश्य चित्रों एवं समकालीन कला को नवीन आयाम प्रदान कर राजस्थानी कला को विशेष पहचान प्रदान की। उदयपुर के ही कलाकारों में एक अन्य नाम कांकरोली में जन्में चित्रकार गोवर्धन लाल जोशी का है जिन्होने राजस्थान के आदिवासीयों एवं यहाँ कीझीलों को अपनी कलाकृतियों में रेखांकन के माध्यम से प्रस्तुत किया जिसमें रेखा की बारिकी, कोमलता, गति एवं लयबद्धता के समावेश के साथ ही समसामयिक यूरोपीयन तकनीक का प्रयोग मुख्य है। इन्होनें कलाकारों को पाश्चात्य कला के अनुकरण एवं प्राचीन नियमबद्धता से मुक्त कराया तथा कला सृजन में नवीन तत्वों का संचार किया। गोवर्धन लाल जोशी के समान ही राजस्थान की कला परम्परा में आधुनिकता का समावेश करते हुए श्री द्वारका प्रसाद शर्मा ने जीवन के विभिन्न कटु सत्यों को अपनी रेखाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया। नवीन विषयों एवं विभिन्न प्रयोगों ने इनकी कला को उच्च शिखर पर पहुँचा दिया, जिसके परिणामस्वरूप राजस्थानी चित्रकला को गति मिली।राजस्थान के अन्य क्षेत्रो में भी कला में परिवर्तन हुए। आधुनिकता के इसी क्रम में बीसवीं शताब्दी के उतरार्द्ध में पद्मश्री कृपालसिंह शेखावत ऐसे कलाकार रहे जिन्होनें परम्परा को अपनाते हुए अपने बौद्धिक स्तर से कला सृजन की प्रक्रिया का आरम्भ किया और उसे सदैव आधुनिक बनाये रखने का प्रयास किया। राजस्थान के शेखावटी क्षेत्र में जन्में कृपालसिंह शेखावत ने मौलिक चित्रण परम्परा में अनुकृतिकार के रूप में ख्याति अर्जित की। कुछ वर्ष जापान रहकर वहां की तकनीक व बारीकी का अध्ययन किया तत्पश्चात् अपने कला कौशल अनुभव तथा सतत् साधना से रेखाओं की कोमलता, प्रवाह और सुन्दर सामंजस्य का भावपूर्ण प्रयोग कर राजस्थानी चित्रकला में आधुनिकता को अग्रसर किया। शेखावाटी क्षेत्र के ही अन्य कलाकार भूरसिंह शेखावत का नाम आधुनिक कला धारा में मील का पत्थर माना जाता है। राजस्थान की ललित कला अकादमी से सदैव जुडे रहने वाले भूरसिंह अपनी स्वभाविक सरल अभिव्यक्ति के लिए जाने जाते है। उनकी कलाकृति में राजस्थान के लोक जीवन की झलक दिखाई पड़ती है साथ ही उसमें आधुनिक विचारधारा तथा तकनीक व विषय वैविध्य का प्रयोग भी हुआ है। आधुनिक विचारधारा को अपनाने वाले राजस्थान के अन्य कलाकारों में देवकीनन्दन शर्मा का नाम विशेष उल्लेखनीय है। अलवर में जन्में देवकीनन्दन षर्मा ने वनस्थली विद्यापीठ से कला की शिक्षा ग्रहण की तत्पश्चात् देश एवं विदेश के अनेक ख्यातिमान कला संस्थानों से आधुनिक कला की तकनीकी शिक्षा ली तथा प्राचीन शास्त्रीय पद्वति में परिवर्तन करके समकालीन कला शैली को अपनाया। 19 वीं शताब्दी के

*Corresponding Author: डॉ. मनीषा चौबीसा

मध्यकाल तक देवकीनन्दन शर्मा के ही समकालीन कलाकार मोनी सान्यालरहे जिन्होनें अपने चित्रों में जीवन की रोजमर्रा की छोटी–छोटी घटनाओं को चित्रण के विषय के रूप में चुना। उनके चित्रण में सामान्य जन जीवन के दुःख, अवसाद, खुशी तथा विभिन्न रसों व मनोभावों को मार्मिक तथा यथार्थ शैली में चित्रित किया गया है। मोनी सान्याल ने आधुनिक चित्रकला के उस पक्ष को प्रस्तुत किया जिसमें अवसाद, मर्म तथा गरीबी की झलक देखी जाती है। उनका यह प्रवास राजस्थानी चित्रकला को यथार्थ के और अधिक नजदीक ले गया तथा कला में वास्तविकता ने सम्पूर्ण कला जगत में विद्रोह उत्पन्न कर दिया।

इसी प्रकार राजस्थानी चित्र शैली को आधुनिक कला धारा के साथ समकालीन कला से जोड़ने वाले प्रमुख कलाकारों में एक नाम है,परमानन्द चोयल काजिन्होनें विकास प्रक्रिया में अपना महत्वपूर्ण योगदान देकर राजस्थानी चित्रकला को आधुनिकता की दौड़ की ओर अग्रसर किया। कोटा में 1924 में जन्में परमानन्द चोयल ने कला की प्रारम्भिक शिक्षा अपने परिवार में रहकर सीखी जिसमें लोक कला का समावेश अधिक था। कला की विधिवत् शिक्षा के लिए जयपुर तथा बम्बई में डिप्लोमा प्राप्त किया और उच्च स्तरीय शिक्षा के लिए लन्दन में कुछ वर्ष रहकर प्रशिक्षण प्राप्त किया। 1942 ई. से चोयल समकालीन कला जगत में रचनात्मक भूमिका निभाने लगे थे। उनके द्वारा अपनाई गई टेम्परा एवं वाश तकनीक ने आधुनिक कला को नया मोड़ प्रदान किया।परिवर्तन एवं नवीनता के इस दौर में 20 वीं शताब्दी के अन्तिम पड़ाव पर आते–आते या यो कहें की 21 वीं शताब्दी को छुते हुए राजस्थान की कला धारा में उत्तरआधुनिकवाद को सरलता से देखा जा सकता है। कलाकारों के निरन्तर नवीन प्रयोगों और अतिषीघ्र परिवर्तित होने वाली शैली, तकनीक, सिद्धान्त तथा समय की मांग ने एक नया अध्याय आरम्भ किया जिसमें प्रतिदिन, प्रतिक्षण कलाकार की मनोदशा में परिवर्तन उसकी कल्पना की अमूर्तन के उस उच्च शिखर पर ले जा रही है जहां आधुनिक कला एक भिन्न रूप में स्थापित है।

राजस्थान के समकालीन कलाकारों में पी. एन. चोयल के पश्चात् कलाकारों के प्रमुख कार्यो एवं विशिष्ठ योगदान को ध्यान में रखकर कुछ नामों का उल्लेख करना आवष्यक है।1925 ई. में बीकानेर में नारायण आचार्य का जन्म हुआ। पिछले पाँच दशकों से श्री आचार्य आधुनिक कला में अग्रणी रहे है। आपने ग्राफिक्स और प्रिन्ट मेंकिग में तकनीकी दृष्टि से महारथ हासिल कर रखी है। संगीत और चित्रकला के समन्वय से आत्मिक अभिव्यक्ति को रेखांकन के माध्यम से प्रस्तुत करने में सिद्ध हन्त है। आधुनिकता के इसी क्रम में जहां एक और कुछ राजस्थानी चित्रकारों में विदेशों की कला तकनीक को सीखकर लोक तकनीक के मिश्रण से नवीन कला शैली को जन्म दिया वहीं कुछ ऐसे कलाकार भी है, जिन्होनें कला सम्बन्धी विचारों, समीक्षकों एवं आलोचनात्मक लेखन की भूमिका अदा कर कला जगत में रचनात्मक योगदान प्रस्तुत किया। उनका यह योगदान कलाकारों, कलाविद्यार्थियों एवं कला इतिहास के लिए एक अमूल्य धरोहर के रूप में माना जाता है जिसके अभाव में कलासृजन में आधुनिकता की कल्पना व्यर्थ है।

इन रचनाकारों में प्रमुख रूप से आर. बी. साखलकर, प्रेमचन्द गोस्वामी, डा. चन्दमणि सिंह, डां. आर. के वशिष्ट, जयसिंह नीरज, प्रकाश परिमल, सुमहेन्द्र, आ. बी. गोतम आदि ऐसे नाम है जिन्होनें कला की आलोचना, समालोचना, समीक्षा, मौलिकता, निजी शैली, तकनीक, विशेषता अथवा कला इतिहास के लगभग सभी पहलूओं पर लेख, पुस्तकें, अथवा विचार व्यक्त किये है। इनके द्वारा प्रदत्त विचार ही वे महत्त्वपूर्ण साक्ष्य है जिन्होनें समय–समय पर कलाकारों, कला सृजकों तथा बाहर से आये कला समीक्षकों के सामने यह सिद्ध कर दिखाया कि राजस्थान के कलाकार किसी भी प्रकार आधुनिकता की दौड़ में पीछे नहीं है अपितु अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर कला को स्थापित करने में महत्त्वपूर्णयोगदान प्रदान कर रहें हैं। इनके द्वारा प्रस्तुत विचार अर्न्तराष्ट्रीय स्तर पर कला में वर्णित प्रमुख घटनाओं और आन्दोलनों को जिज्ञासुओं कोप्रस्तुत कर रहे है।

अन्य प्रमुख कलाकारों में ज्योति स्वरूप, पी. मनसाराम, ओ. डी. उपध्याय, रमेश गर्ग आदि ने अपनी संवेदनापूर्ण कृतियों में मूर्त और अमूर्त चित्रण के माध्यम से विभिन्न भाव प्रस्तुत किये है। इनके साथ–साथ सुरेश शर्मा, लक्ष्मी लाल वर्मा, शैल चोयल, सुरेश राजोरिया, दुष्यन्त सिंह आदि के प्रवाहपूर्ण रेखांकन ने कला जगत में दृश्य चित्रण तथा रेखा की महत्ता को परिभाषित करने के अतिरिक्त अति–यर्थावादमें सांकेतिक भाषा में कला अभिव्यक्ति में सफलता प्राप्त की है।

इस प्रकार प्रदेश में समसामयिक कलाकारों के दो वर्ग सामने आये। प्रथम वर्ग में वे कलाकार रहे जो परम्परागत कलातत्वों को नवीन प्रयोगों द्वारा अपनाते हुए चले तथा दुसरे वर्ग में आधुनिक अमूर्त चित्रकारों का स्थान रहा। इनमें चित्रकार बी. जी. शर्मा, वेदपाल शर्मा, घनश्याम शर्मा, रेवाशंकर एवं मोहनलाल गुप्ता परम्परा के पोषक रहे जबकि मोहन शर्मा, शैल चोयल, सुम्हेन्द्र, तेज सिंह, रामेश्वर सिंह, रघुनाथ षर्मा, बसन्त कश्यप, किरण मुर्डिया, समन्दर सिंह खागरोत, ललित शर्मा, नाथूलाल वर्मा, अशोक हाजरा तथा कन्हैयालाल वर्मा ने रेखा के साथ रंग एवं रूप संयोजन से चित्रण की मौलिकता को सिद्ध किया। इसी क्रम में सुरेश शर्मा ने वास्तुनिरपेक्ष आकारों का अंकन आरम्भ किया तो विद्यासागर उपाध्याय ने नवीन प्रयोगों की श्रृंखला स्थापित की तथा शबीर हसन काजी, दिलीप चौहान, अब्दूल करीम, हर्ष छाजेड़, अम्बालाल दमामी, सुभाष मेहता, अब्बास अली बाटलीवाला ने कई नवीन प्रयोगो में सफलता प्राप्त की। इसी प्रकार भवानीशंकर शर्मा, आर.बी. गोतम, रमेश सत्यार्थी, शैलेन्द्र भटनागर, राजीव गर्ग, सुभाष केकरें, रणजीत सिंह की कलाकृतियॉ समकालीन कला जगत की देन है।

*Corresponding Author: डॉ. मनीषा चौबीसा

प्रदेश की महिला चित्रकारों में रेखा भटनागर, दीपिका हाजरा, उषारानी हूजा, वीरबाला भावसार, प्रभा शाह, निमिषा शर्मा, मीनाक्षी कासलीवाल, सुरभि शिरमीवाल, किरण मुरडिया, मंजू मिश्रा, इला यादव, अर्चना कुलश्रेष्ठ, रीता प्रताप, इंदू सिंह, ममता चर्तुवेदी, मीना बया, रेखा पंचोली, अर्चना जोशी आदि ने विशेष पहचान बनाई।

शताब्दी के अन्तिम दशक के चित्रकारो मे युवा चित्रकार आनन्द शर्मा, हरिशंकर गुप्ता, विनय शर्मा, गगन दाधीच, अर्जुन प्रजापति, अंकित पटेल, जगमोहन माथोडिया, गोपाल शर्मा, सुरेन्द्र जोशी, रामानुज पंचोली, युगल किशोर शर्मा, राजाराम व्यास, मोहम्मद सलीम, बंसीलाल शर्मा, एकेश्वर हरवाल, विष्णु माली, राम सिंह, रामावतार सोनी, षहिद परवेज, चिन्टू, चिन्तन, हेमन्त द्विवेदी, मदनसिंह राठोड़, धर्मवीर वशिष्ठ एवं दीपक भारद्वाज जैसे चित्रकारों ने अपनी पहचान बनाई।

उपर्युक्त सभी कलाकारों की कलाकृतियों को देखकर जान पड़ता है कि उत्तर आधुनिक राजस्थानी कला में रेखा को भिन्न रूप में प्रयुक्त किया गया। जहाँ एक ओर पारम्परिक अजन्ता की शास्त्रीय पद्धति से सिद्धहस्त कलाकारों ने रेखांकन के माध्यम से प्राचीन चित्र शैली का अग्रसर किया वहीं दूसरी ओर स्वछन्द, स्वतन्त्र एवं उन्मुक्त रेखांकन के अल्प प्रयोग से कला में नवीन भाषा का प्रार्दुभाव हुआ जिसमें मात्र संकेतों से अमूर्त चित्रण करके भी उन सभी रसात्मक सौंदर्यो की अभिव्यक्ति की गई, जिससे आत्मिक आनन्द की प्राप्ति होती है। मिश्रित माध्यम से साफ सुथरी रेखाओं द्वारा अर्मूत काल्पनिक भावों को उचित संयोजना एवं व्यवस्थित आकृतियों से प्राचीनकला का आभास कराते हुए जिस कला शैली का प्रचार निरन्तर गतिशील है उस आधुनिक कला को प्रसारित करने हेतु अनेक कलाकारों ने हाथ थामा और एक साथ परन्तु भिन्न–भिन्न माध्यमों से उसे उच्च शिखर तक पहुँचाने का प्रयास जारी है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि यह सत्य है आदिम काल से कला में रेखांकन ही वह प्रमुख तत्त्व रहा है जिसके द्वारा सरलता से आत्मिक अभिव्यक्ति की जा सकती है परन्तु उसकी उपस्थिति एवं स्थान में बदलती हुई परिस्थितियों से जो परिवर्तन आये है उन्हें समकालीन कलाकारों ने पुनः स्थापित करने का प्रयास किया है। इनकी कृतियों में रेखांकन के विविध आयाम देखे जा सकते हैं जिनमें भावाभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता से रेखीय अभिव्यक्ति की प्रमुखता को सिद्ध किया है। कला जगत में एक समय ऐसा आया था जब यूरोपीयन कला ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया था कि कलाकृति में रेखा की अपेक्षा रंग अथवा संयोजन अधिक महत्त्वपूर्ण है परन्तु आधुनिक कला में इस तथ्य को पूर्णतः नकारा गया और एकबार फिर से यह प्रमाणित करने का प्रयास किया है कि बदलती हुई कला धारा में चाहे कोई भी विषय, तकनीक अथवा आदर्श रहे हो परन्तु सभी का प्रारम्भिक आधार रेखा ही हो सकता है। इसी को प्रतिस्थापित करने के लिए चित्रकारों ने रेखा की प्रकृति को विस्तारित कर प्रस्तुत किया है जिसमें उसे विषयात्मक, भाव–प्रधान एवं कथानक पूर्ण माना है। अतः अब रेखांकन अलग से कला की एक विधा है जो स्वतन्त्र है और अपने आप में सम्पूर्ण है। इसी तथ्य के साथ राजस्थान की उत्तरार्द्ध की चित्रकला को मापा जा सकता है जिसमें आधुनिक लयात्मकता, कोमलता और सौंदर्य के दर्शन होते है।

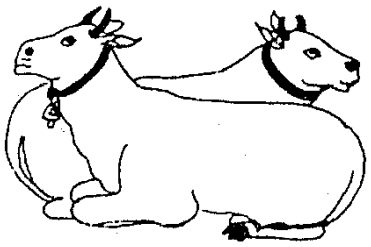

संदर्भ :–

1. वशिष्ठ राधाकृष्ण –राजस्थान के तैल चित्रकार कलाभूषण मास्टर कुन्दनलाल मिस्त्री, इलाहाबाद
2. वशिष्ठ राधाकृष्ण एवं गोतम आर. बी. –राजस्थान के कलाविद् जयपुर पृ. 7–15, 16–25
3. दमामी, ए. एल., –राजस्थान की आधुनिक कला एवं कलाविद्, उदयपुरपृ. 15–20
4. वषिष्ठराधाकृष्ण –राजस्थान की चित्रकलामेंआधुनिकता के तत्व, जयपुरपृ. 75–80
5. रामनाथ–भारतीय कला आन्दोलन और राजस्थानी कला, जयपुर पृ. 25–27
6. हेमन्त शेष–राजस्थान की समकालीन चित्रकला, पृ. 15–16
7. मीनाक्षी काजी–राजस्थान की समसामयिक कला, पृ. 20–21

*Corresponding Author: डॉ. मनीषा चौबीसा

चित्र 1. स्त्री रेखाचित्र
1893–96 ई.,अभ्यासचित्र,चि. कुन्दनलाल
शिवकुमार शर्मासंग्रह, उदयपुर

चित्र 2. पिताकास्नेह
1890ई,. रेखाकंन,चि. कुन्दनलाल
निजीसंग्रहउदयपुर

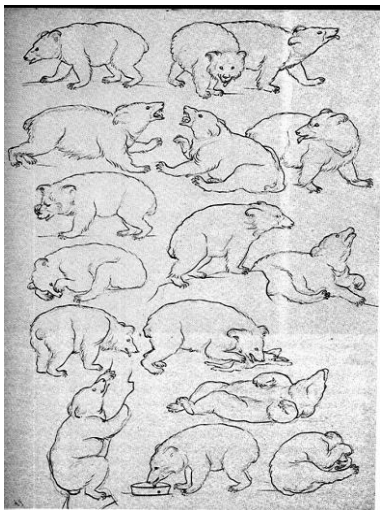

चित्र 3. भालुओं की मुद्राओंकाअभ्यास
1919ई. अभ्यासचित्र,चि. घासीराम
निजीसंग्रह, उदयपुर

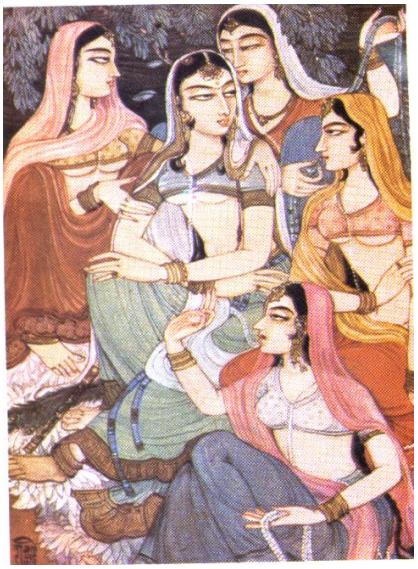

चित्र 4. प्रतिक्षारतगोपियां
1942 ई,
रेखायुक्तचित्र,गीतगोविन्द
रामगोपालविजयवर्गीय
संग्रहजयपुर

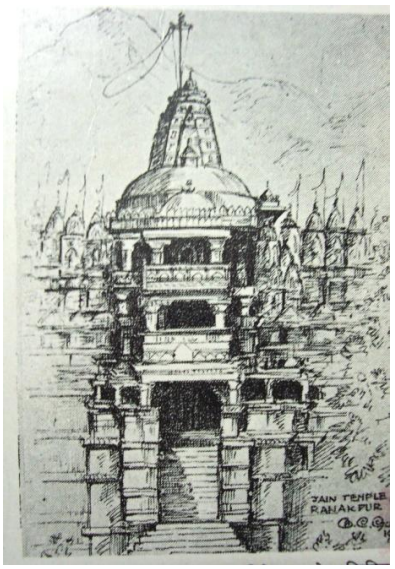

चित्र 5. जैनमन्दिर
1981 रणकपुर, रेखाकंन,चि. भवानीचरणगुई
राजस्थानललितकलाअकादमी, जयपुर

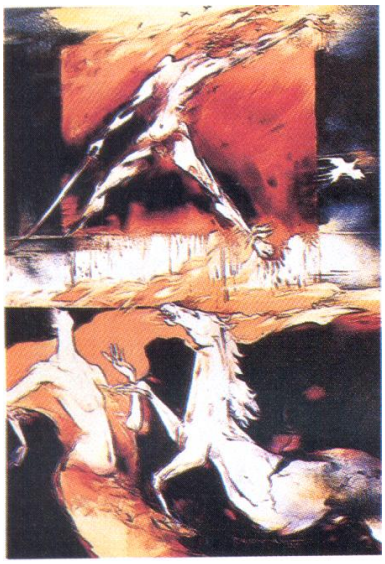

चित्र 6. होर्सविदआउटराइडर
1997 रेखाकितचित्र, चिपी. एन. चोयल
चित्रकारनिजीसंग्रहउदयपुर